मकर सङ्क्रान्ति का ज्योतिषीय विमर्श

(डा0 अनिल कुमार पोरवाल, ज्योतिर्विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

भारतीय संस्कृति में मकरसङ्क्रान्ति पर्व का आध्यात्मिक–सांस्कृतिक–धार्मिक प्रभाव सामान्य जनमानस पर अमिट रूप से अंकित है। यह पर्व पूरे भारत में किसी न किसी स्वरूप में प्रतिष्ठित होकर, भारत के अलग–अलग प्रदेशों में **खिचड़ी**[1], **उत्तरायणी**[2], **पोंगल**[3], **माघी**[4], **लोहड़ी**[5], **बिहू**[6] आदि नामों के रूप में अत्यन्त उत्साह के से मनाया जाता है। कालविधानक[7] ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि में मकरसङ्क्रन्ति, कालरूपी अवयवों का संयोग है, जिसके अन्तर्गत सूर्य धनुराशि को छोड़कर मकर राशि में संक्रमण करता है, अर्थात् सूर्य के द्वारा धनुराशि से मकर राशि में गोचर अथवा प्रवेश से मकरसङ्क्रन्ति कहा जाता है। जैसाकि ज्योतिःसार में कहा गया है–

पूर्वराशि परित्यज्य तूत्तरं याति भास्करः।

स राशिः संक्रमाख्यः स्यान्मासर्त्वायनहायने।।[8]

'सङ्क्रन्ति' शब्द **सम** उपसर्ग, **क्रम** धातु व **क्तिन्** प्रत्यय के योग से बना स्त्रीलिङ्ग शब्द है।[9] इसका अर्थ है– हटना, पार करना, कमण करना, प्रवेश करना। अतः सङ्क्रमण, सङ्क्रान्ति, सङ्कम, गोचर आदि पर्यायवाची शब्द हैं।

'सङ्क्रमणं सङ्क्रान्तिः' ग्रहों की गति संचार से एक राशि की अन्तिम सीमा और उसी बिन्दु पर अग्रिम राशि का प्रारम्भ होना ही सङ्क्रमण या सङ्क्रान्ति काल है। वस्तुतः सभी ग्रहों की 12 सङ्क्रान्तियाँ होती हैं। सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि की सङ्क्रान्तियों का उल्लेख शास्त्रों में प्राप्त होता है। किन्तु सङ्क्रन्ति प्रकरण के अन्तर्गत सूर्यग्रह की ही बारहों सङ्क्रान्तियों का विवेचन मुख्य रूप से उल्लिखित है। क्योंकि

---

1. उत्तर प्रदेश व बिहार में।
2. उत्तरांचल में।
3. तमिलनाडु में।
4. नेपाल में मकर सङ्क्रान्ति को माघे–संङ्क्रान्ति, सूर्योत्तरायण तथा थारू समुदाय में माघी कहा जाता है।
5. पंजाब व हरियाणा में।
6. असम में।
7. सिद्धान्तशिरोमणि, गणिताध्याय, मध्यमाधिकार, मानाध्याय, श्लोक–9
8. ज्योतिःसार उद्धृत संवत्सरसंहिता, पृ0 132
9. संस्कृत–हिन्दी शब्दकोश, वामन शिवराम आप्टे, पृ0 1159

सौरमास सूर्यसङ्क्रन्तिवश होता है तथा तदनुसार वर्ष, ऋतु, अयन, कुम्भ–मकरादिक पर्व सभी सूर्यसङ्क्रान्ति से सम्बन्ध रखते हैं।[10] वेदों में भी कहा गया है कि सूर्य की सङ्क्रान्तियों के द्वारा ही दिन के विभागों की भाँति ऋतुएँ होती हैं–

आदित्यस्त्वेव सर्व ऋतवः। यदेवोदेत्यथ वसन्तः। यदा संगवोऽथ ग्रीष्मः।

यदा मध्यन्दिनोऽथ वर्षा। यदापराह्णोऽथ शरत्। यदैवास्तमेत्यथ हेमन्तः।।[11]

सङ्क्रान्तियाँ दो प्रकार की होती हैं– एक **सायन**[12] और दूसरी **निरयण**[13]। अयनांशयुक्त स्पष्टसूर्य की सङ्क्रान्ति को सायनसूर्यसङ्क्रान्ति या दृश्य–सङ्क्रान्ति कहते हैं। जबकि धर्मशास्त्र तथा होरा ज्योतिष निरयण सूर्यसङ्क्रान्ति को ही मान्यता देते आ रहे हैं। इसका निराकरण करते हुए मुहूर्तचिन्तामणि की पीयूषधारा टीका में **पुलस्त्य के वचन**[14] का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि 'स्नानदानजपश्राद्धव्रतहोमादि कार्यों में किये गये सायन सङ्क्रान्ति का व्यवहार अक्षया पुण्य लाभाय होता है।' इत्यादि से चल या सायन सङ्क्रान्ति में उक्त परिगणित धर्म–कार्यों के अतिरिक्त उपनयन, विवाहादि शुभकर्मों में निरयण सङ्क्रान्ति ही गृहीत होती है। **सायन सङ्क्रान्ति** के महात्म्य को बतलाते हुए मुहूर्त गणपति में भी उल्लिखित है–

सायनस्य रवेर्वापि यदा सङ्क्रमणं भवेत्।

यदा स्यादधिकं पुण्यं रहस्यं विदुषा हि तत्।।[15]

सूर्य की इन द्वादश सङ्क्रान्तियों को भिन्न–भिन्न संज्ञाओं से अभिहित किया गया है। मिथुन–कन्या–धनु–मीन द्विस्वभाव राशियों की सङ्क्रान्तियों का नाम **षड्शीतिमुखा,** वृष–सिंह–वृश्चिक–कुम्भ राशियों की सङ्क्रान्तियों का नाम **विष्णुपदीसंज्ञक** है और चर राशियों के अन्तर्गत तुला व मेष राशियों की सङ्क्रान्तियाँ **विषुवसंज्ञक** तथा कर्क व मकर राशियाँ **अयनसंज्ञक** हैं। जैसा कि नारदसंहिता में कहा गया है–

स्थिरभेष्वर्क सङ्क्रान्तिज्ञेया विष्णुपदाह्व्या।

---

10 मुहूर्तचिन्तामणि, टीकाकार केदारदत्त जोशी, पीताम्बराटीका, पृ0 156

11 शतपथब्राह्मण, 2.2.3.9 उद्धृत संवत्सरसंहिता, डॉ0 सुरेश चन्द्र मिश्र, पृ0 133

12 अयन सहित अर्थात् अयनांश युक्त।

13 अयन रहित अर्थात् अयनांश का त्यागकर।

14 **स्नानदानजपश्राद्धव्रतहोमादिकर्मसु ।**
सुकृतं चलसङ्क्रान्तावक्षयं पुरुषोऽश्नुते।।
(पुलस्त्यः उक्तम् उद्धृत मुहूर्तचिन्तामणि, पीयूषधाराटीका, पृ0 156)

15 मुहूर्तगणपति, सङ्क्रान्ति प्रकरण, श्लोक संख्या–20

षड्शीतिमुखीज्ञेया द्विस्वभावेषु राशिषु।।

सौम्ययाम्यायने नूनं भवेतां मृगकर्किणोः।

तुलाधराजयोर्ज्ञेयो विषुवत्सूर्य संक्रमः।।[16]

उपरोक्त उल्लिखित सङ्क्रान्तियों के अन्तर्गत मकर सङ्क्रान्ति को शास्त्रों में विशेष महत्त्व देते हुए इसे **उत्तरायण** की संज्ञा से अभिहित किया गया है। ज्योतिषशास्त्र में उत्तरायण काल षड्मास[17] के तुल्य बताते हुए इसे सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है। क्योंकि मकर सङ्क्रान्ति से ही शास्त्रों में शुभकार्यों की प्रवृत्ति कही गयी है।

इसके खगोलीय आधार को सुस्पष्ट करते हुए शास्त्र का मत है कि भारत देश की भौगोलिक स्थिति पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में है। मकर सङ्क्रान्ति से पूर्व सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध के दूरतम बिन्दु पर स्थित होता है अर्थात् भारत से अपेक्षाकृत अधिक दूर होता है इसीकारण यहाँ पर रातें बड़ी तथा दिन छोटे होते हैं तथा शीतकाल का मौसम और हेमन्त ऋतु गतिमान होती है। किन्तु मकरराशि में सूर्य के प्रवेश से ही यह उत्तरी गोलार्द्ध की ओर अग्रसर होना प्रारम्भ करता है अतएव इस दिन से रातें छोटी और दिवस का मान बढ़ने लगता है तथा साथ ही शिशिर ऋतु का आरम्भ हो जाता है। दिवस के मान में वृद्धि होने से प्रकाश अधिक तथा रात्रिमान घटने से अन्धकार में कमी होने लगती है। अतः मकर सङ्क्रान्ति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है। प्रकाश अधिक होने पर प्राणियों में चेतनता तथा कार्यशक्ति में नई ऊर्जा का संचार होने लगता है। जिसके फलस्वरूप भारतीय जनमानस विविध रूपों में भगवान सूर्य की उपासना, आराधना, स्नान, जप, दान, होमादि कर्मों द्वारा पुण्य की भागीदारी को सुनिश्चित करता है।

सङ्क्रान्ति पर्व के पूर्णफल प्राप्ति हेतु शास्त्रों में इसके लिए **पुण्यकाल की व्यवस्था** की गई है। पुण्यकाल के आनयन हेतु त्रिस्कन्ध[18]ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तस्कन्धान्तर्गत सूर्यसिद्धान्त में वर्णित है–

अर्कमानकलाः षष्ट्या गुणिता भुक्तिभाजिताः।

---

[16] नारदसंहिता, एकादशोध्याय, श्लोक संख्या–14–15

[17] **भानोर्मकरसङ्क्रान्तेः षण्मासा उत्तरायणम्।**

(सूर्यसिद्धान्त, मानाध्याय, श्लोक संख्या–9)

[18] **सिद्धान्तसंहिताहोरारूपं स्कन्धत्रयात्मकं।**

(नारदसंहिता, प्रथमाध्याय, श्लोक 4)

तदर्धनाड्यः सङ्क्रान्तेरर्वाक् पुण्यं तथा परे।।[19]

सूर्यबिम्ब के कलामान (प्रमाण) को 60 से गुणाकर सूर्य की गति से भाग देने पर, जो लब्धि घट्यादि हो उसका आधा (लब्धि ÷ 2= घटी) सङ्क्रान्तिकाल से पूर्व तथा पश्चात् में सङ्क्रान्ति का पुण्यकाल होता है।

संहिताओं में स्थूलमान से रविबिम्बकला का मान 32 तथा मध्यमरविगति 60 कला मानी गयी है। इसी के आधार पर सङ्क्रान्तिकाल से 16 घटी पूर्व तथा पश्चात् पुण्यकाल माना गया है। यथा–

(सूर्यबिम्बकला x 60) ÷ 60 = (32 x 60) ÷ 60 = 32 लब्धि।

अतः लब्धि ÷ 2 = 32 ÷ 2 = 16 घटी।

मुहूर्तचिन्तामणि[20], **मुहूर्तगणपति**[21], **वसिष्ठसंहिता**[22] तथा **ब्रह्मसिद्धान्त**[23] में पुण्यकाल साधित सङ्क्रान्तिकाल से पूर्व तथा पश्चात् 16–16 घटिकाओं का ही कहा गया है। गोलीय स्वरूप में रविबिम्ब के अग्रिम भाग के सङ्क्रमण के आरम्भ से बिम्ब के अन्तिम भाग तक के सङ्क्रमण का नाम ही पुण्यकाल है। **नारदसंहिता**[24] के अनुसार, दिन में सङ्क्रान्तिकाल होने से महान पुण्य होता है तथा रात्रि में सङ्क्रान्ति होने पर विशेष व्यवस्था कही गयी है– सूर्यास्तकाल में मकर की सङ्क्रान्ति हो तो उसी दिन पुण्यकाल होता है तथा सन्धि के बाद रात्रि में (सूर्यास्त से 3 घड़ी बाद) सङ्क्रान्ति हो तो अग्रिम दिवस में पुण्यकाल होता है। यथोक्तम्–

सूर्यास्तमनवेलायां यदि सौम्यायनं भवेत्।
तदोपेयादहः पुण्यं पराहः परतो यदि।।[25]

---

[19] सूर्यसिद्धान्त, मानाध्याय, श्लोक संख्या–11

[20] **संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुण्या मता षोडशषोडशोष्णगोः।**

(मुहूर्तचिन्तामणि, संक्रान्ति प्रकरण, श्लोक संख्या–5)

[21] **पुण्याः षोडशनाड्यस्तु पराः पूर्वास्तु संक्रमात्।**

(मुहूर्तगणपति, द्वादश अध्याय, श्लोक संख्या–12)

[22] वसिष्ठसंहिता, उद्धृत मुहूर्त चिन्तामणि, पीयूषधारा टीका, पृ0 162

[23] ब्रह्मसिद्धान्त उद्धृत मुहूर्त चिन्तामणि, पीयूषधारा टीका, पृ0 162

[24] **अहः संक्रमणे कृत्स्नं महत्पुण्यं प्रकीर्तितम्।**
रात्रौसंक्रमणे भानोर्व्यवस्था सर्वसंक्रमे।।

(नारदसंहिता, एकादशोध्याय, श्लोक संख्या–16)

[25] नारदसंहिता, एकादशोध्याय, श्लोक 18

ऐसा ही मत मुहूर्तगणपति[26], मुहूर्तचिन्तामणि[27], वृद्धगर्ग आदि संहिताग्रन्थों में भी प्राप्त होता है। इस विशेष स्थिति में, मकर सङ्क्रान्ति के बाद की 16 घटी[28] के बजाए 40 घटी का पुण्यकाल ग्रहण किया जाता है।[29] जैसे– किसी दिन 30 घटी का रात्रिमान है और उस दिन सांय–संध्या के बाद ही मकर–सङ्क्रान्ति लगी तो तत्पश्चात् 16 घटी का विशेष पुण्यकाल यहाँ लेने पर (3 + 16 = 19, 30 – 19=) 11 घटी सूर्योदय से पूर्व ही वह समाप्त हो जायेगा। अतएव रात्रि का यह पुण्यकाल अनुपयोगी होने के कारण यहाँ 40 घटी का विशेष पुण्यकाल लेना होगा जिसमें (40– 27=) 13 घटी सूर्योदय के बाद तक स्नान, दानार्थ विशेष पुण्यकाल मिलेगा[30]। मुहूर्तगणपति में ही अन्य प्रकार से कहा गया है कि यदि मकर की सङ्क्रान्ति सूर्यास्त के पश्चात् तीन घड़ी पर्यन्त हो तो पूर्वदिन के पर भाग में अर्थात् मध्याह्न से पश्चात् तथा तीन घड़ी बाद हो तो दूसरे दिन मध्याह्न तक पुण्यकाल होता है।[31]

श्रीजगन्नाथपंचाग के अनुसार वर्तमान वर्ष विक्रम् संवत् 2071, शक संवत् 1936 तथा ई0 वर्ष 2015 में मकर सङ्क्रान्ति की गणितीय स्थिति नवमी तिथि (उदयकालिक), बुधवार, स्वातीनक्षत्र में 29 घटी 30 पल पर बनती है, जो अंग्रेजी दिनांक 14 जनवरी, 2015 के सायंकाल 19 बजकर 07 मिनट (PM) पर होगा। इसके अनुसार मकर सङ्क्रान्ति का पुण्यकाल को ज्ञात करने के लिए 40 घटी या 16 घण्टे जोड़ने पर सूक्ष्मरूप से 15 जनवरी, 2015 के 11 बजकर 07 मिनट अथवा स्थूल रूप मध्याह्नकाल तक रहेगा। बुधवार के दिन सङ्क्रान्ति की स्थिति बनने से यह सामान्यजन के लिए आरोग्यकारक, राजाओं के मध्य सद्भाव की स्थिति का निर्माण तथा कृषि कार्यों से शुभ परिणामों को प्रदान करने वाला होगा। और साथ ही साथ राष्ट्र के विकास हेतु कल्याणकारी होगा।

---

[26] मुहूर्तगणपति, द्वादश अध्याय, श्लोक 13–14

[27] मुहूर्तचिन्तामणि, संक्रान्ति प्रकरण, श्लोक 6

[28] 1 घटी = 24 मिनट

[29] **त्रिशंत् कर्कटके पूर्वाश्चत्वारंशत्परा मृगे।**

(मुहूर्तगणपति, द्वादशोध्याय, श्लोक 12)

[30] ज्योतिषरहस्य, द्वितीय खण्ड, पृ0 174

[31] **मकरेऽस्तमितादूर्ध्वं संक्रमे प्राग् घटीत्रयम्।**
यदापूर्वदिने पुण्यं मध्याह्नात् प्राक् प्रकीर्तितम्।।

(मुहूर्तगणपति, द्वादशोध्याय, श्लोक 17)